ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 26 कुल पृष्ठ-8 1 से 7 अप्रैल, 2021 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2078 चै. कृ.-04

आर्य समाज टाण्डा, जिला–अम्बेडकरनगर, उ. प्र. का 129वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 18 से 21 मार्च, 2021 तक भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य जी ने वैदिक सिद्धान्तों पर दिये ओजस्वी प्रवचन

आर्य समाज के प्रधान एवं मिश्रीलाल आर्य इण्टर कॉलेज तथा डी.ए.वी. एकेडमी के प्रबन्धक श्री आनन्द कुमार आर्य के संयोजन में हुआ सफल कार्यक्रम

आर्य समाज टाण्डा, जिला–अम्बेडकरनगर, उत्तर प्रदेश का 129वाँ वार्षिकोत्सव फाल्गुन शुक्ल पंचमी से अष्टमी विक्रमी 2077 दिनांक 18 से 21 मार्च, 2021 को धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रतिष्ठित नेता आर्य समाज टाण्डा के प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य के संयोजन में विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन किया गया। इस उत्सव में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, अन्तर्राष्ट्रीय गायक श्री कुलदीप आर्य, श्री सत्य प्रकाश आर्य आदि के ओजस्वी व्याख्यानों से श्रोताओं ने भरपूर लाभ उठाया। 18 मार्च, 2021 को प्रातः यज्ञ से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। ब्रह्मा पद पर आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी सुशोभित रहे। यज्ञ के उपरान्त सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण के द्वारा इस समारोह का उद्घाटन किया। ध्वजारोहण के उपरान्त डी.ए.वी. एकेडमी के छात्र–छात्राओं एवं मिश्रीलाल आर्य इण्टर कॉलेज की छात्राओं ने ध्वज गीत प्रस्तुत किया। 18 से 21 मार्च तक प्रतिदिन सायं 5 से 7 बजे तक संगीतमय रामकथा का प्रस्तुतिकरण अन्तर्राष्ट्रीय गायक श्री कुलदीप आर्य एवं उनकी मण्डली ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम तथा रामायण के वैदिक स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए प्रस्तुत की। प्रतिदिन प्रातः यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी और आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी के प्रवचन तथा 10.30 से 12 बजे तक रामकथा का प्रस्तुतिकरण किया गया। सायं 7 से 9 बजे तक स्वामी आर्यवेश जी और आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी के ओजस्वी व्याख्यान होते रहे।

21 मार्च को अपरान्ह 2 से 4 बजे तक युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी के संयोजन में 'कौन बनेगा बाल सत्यार्थी' कार्यक्रम बड़ा ही उत्साहवर्द्धक रहा। मिश्रीलाल आर्य इण्टर कॉलेज की छात्राओं की आठ टीमों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। इन टीमों में तीन–तीन छात्राएँ शामिल थीं और इस तरह से कुल 24 छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को विशेष पारितोषिक दिया गया तथा अन्य सभी छात्राओं को प्रोत्साहन पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। विदित हो कि मिश्रीलाल आर्य इण्टर कॉलेज में पढ़ने वाली छात्राओं में बहुत बड़ी संख्या मुस्लिम परिवारों के छात्राओं की है और वे कार्यक्रम की हर गतिविधि में विशेष उत्साह के साथ भाग लेती हैं। अनेक मुस्लिम छात्राएँ वेद मन्त्र कण्ठस्थ करके सुनाती हैं। आर्य समाज के विभिन्न विषयों पर आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेती हैं और आर्य समाज की ओर से निकाली जाने वाली शोभा यात्रा में भी ये छात्राएं उत्साह के साथ नारे लगाते हुए सम्मिलित होती हैं। स्व. श्री मिश्रीलाल आर्य जी एक जाने–माने आर्यनेता थे और उनकी सभी वर्गों में विशेष प्रतिष्ठा थी। उनके द्वारा स्थापित यह इण्टर कॉलेज आज टाण्डा के सबसे प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों में प्रथम नम्बर पर है। श्री आनन्द कुमार आर्य जो आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के लम्बे समय तक प्रधान रहे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान रहे। उनके नेतृत्व में इस समय ये संस्थाएं निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर हैं। श्री आनन्द कुमार जी स्वामी आर्यवेश जी को प्रतिवर्ष अपने संस्थान में विशेष रूप से शेष पृष्ठ 8 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

यथार्थ परिप्रेक्ष्य में 'वैदिक संस्कृति'

– रत्नप्रकाश इन्द्रमोहन आर्य तिवारी

वैदिक संस्कृति में 'धर्म' की मान्यता अतिमहत्त्वपूर्ण है। मनुष्य जन्म का उद्देश्य आत्मा तथा परमात्मा को जानना है। धर्म कोई दिखावे या आडम्बर की वस्तु नहीं हैं। धर्म जीवन में प्रत्येक पद पर और प्रत्येक पल आचरण की वस्तु है। धर्म की मोटी परिभाषा अधर्म से बचना है, क्योंकि पाप न करना, पुण्य का प्रथम प्रयत्न अथवा परिणाम है। आज के आधुनिक युग में धर्म मात्र दिखावे की वस्तु बन गई है। क्योंकि एक तरफ हम धार्मिक होने का दिखावा करते हैं, तो दूसरी ओर पापाचरण में लगे रहते हैं। मनुष्य धर्माचरण तो करना चाहता है, किन्तु दूसरी ओर अधर्म को छोड़ना नहीं चाहता, जिसके कारण आज नये–नये मत–पंथों की बाढ़ आ रही है।

वैदिक संस्कृति ही विश्व की प्राचीन तथा महानतम संस्कृति है। इसीलिए इसे हमारे ऋषि, मुनियों ने वेदप्रतिपादित "सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा" को सिद्ध कर दिखलाया हैं। जिन परिष्कृत भावनाओं और संस्कारों के आधार पर समाज में मनुष्य अपने व्यवहार से इस प्रकार के उदाहरण प्रस्तुत करता है कि जिसमें व्यक्ति का केवल अपना स्वार्थ सिद्ध न होकर प्राणिमात्र का हित हो, इन विचार–परम्पराओं का नाम ही 'संस्कृति' हैं। वैदिक संस्कृति में जीवनयापन का जो उच्च आदर्श रखा है, वह अन्य किसी, संस्कृति या विचारों में नहीं हैं। इस रहस्य को समझने के लिए वेदों तथा उपनिषदों का संस्कार के प्रति जो यथार्थवादी दृष्टिकोण रहा है, उसे समझने तथा जानने की आवश्यकता है।

संसार में दो तरह की संस्कृतियाँ हैं, पहली भोगवादी जिसे हम 'भौतिकवादी संस्कृति' कहते हैं तथा दूसरी 'अध्यात्मवादी संस्कृति'। भौतिकवादी संस्कृति संसार के सुख–ऐश्वर्यो को भोगना तथा आत्मा–परमात्मा जैसे तत्वों को न मानना है। भौतिकवादी संस्कृति का आधार आधुनिक विज्ञान की मान्यताएँ हैं, जबकि अध्यात्मवादी संस्कृति जिसे हम वैदिक संस्कृति मानते हैं, जिसका वैदिक दृष्टिकोण समन्वयात्मक हैं, न निरा भोगवादी है, न निरा त्यागवादी है। ईश्वर ने सृष्टि जीवों के उपभोग के लिए ही बनाई है। सारे संसार का वैभव मनुष्य के उपभोग के लिए ही तो हैं, यजुर्वेद में कहा है, 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः।' – शरीर तथा संसार सत् है, इसलिए इनका भोग करो, परन्तु ये अन्त तक टिकने वाले नहीं हैं। इसलिए संसार को त्याग भाव से भोगो। जैसे हम यात्रा के समय किसी होटल में रूकते हैं। वहाँ की हर वस्तु का हम उपभोग लेते हैं, तथा होटल छोड़ते समय हम अपने अगले लक्ष्य की ओर बढ़ जाते हैं। वहाँ की वस्तुओं से हमें तनिक भी मोह नहीं होता।

भोग तो भोगने के लिए ही हैं, किन्तु उसमें फंसकर हमें अपने लक्ष्य को नहीं भूलना है। उपनिषदों ने लक्ष्य के सम्बन्ध में कहा है 'नाल्पे सुखमस्ति भूमा वै सुखम्।' यह लक्ष्य 'भूमा' अर्थात् अनन्त को पाने का है, जो भोग हमें भोगने चाहिए, वे भोग ही हमें भोग लेते हैं, मगर भोगों के प्रति हमारी तृष्णा समाप्त होने का नाम ही नहीं लेती। ईश्वर ने इन भोगों द्वारा सुखों की मात्र झलक ही हमें दिखलाई हैं। सच्चा सुख तो मात्र ईश्वर प्राप्ति में ही हैं और वही हमारा 'लक्ष्य' होना चाहिए। ऋग्वेद का 'इन्द्र अगस्त्य संवाद' इसी बात की पुष्टि करता है। इन्द्र ईश्वर का प्रतिनिधित्व करता है तथा अगस्त्य जीवात्मा का। गर्भस्थ जीव अष्टममास में अपनी बुद्धि में विचार कर रहा है कि बार–बार जन्म–मरण के चक्कर में पड़कर मैने बहुत यातनाएँ भोगी है। इस बार जन्म लेकर मैं साख्य तथा योग का अभ्यास करूँगा। अर्थात् इसके अभ्यास से जन्म–मरण के चक्कर से छूटने का उपाय करूँगा। मगर दशममास में उत्पन्न होकर बाहर की वायु का स्पर्श पाकर, अपनी उस ईश्वर के सम्मुख की प्रतिज्ञा को भूल जाता है। तब इन्द्र (परमेश्वर) कहता है कि 'जीव का चित्त परिवर्तनशील है। जीव जन्म लेकर सांख्य योग के अभ्यास की अपनी पूर्व प्रतिज्ञा को छोड़ अपने प्राणों के पोषण में लग जाता है।

वैदिक संस्कृति सृष्टिनियमानुकूल त्यागभाव पर ही आधारित है। इसका मूल इसी भाव में निहित है। जिससे संसार में सुख–शान्ति स्थापित हो सकती है। संसार में हर वस्तु को समयानुसार स्वेच्छा से या बलपूर्वक त्यागना ही पड़ता है। यदि स्वेच्छापूर्वक कार्य होगा, तो वह दुःख का कारण नहीं बन पायेगा, और यदि बलपूर्वक होगा तो उससे दुःख उठाना ही पड़ेगा। इसीलिए वैदिक संस्कृति में 'आश्रमव्यवस्था' को महत्त्वपूर्ण माना गया है। आयु के अनुसार आश्रमव्यवस्था हमारे जीवन यापन का उचित ढंग तथा निहितकार्य का निर्देशन करती है। इसी तरह वैदिक वर्णव्यवस्था हमारे सामाजिक जीवन के प्रति हमारे उत्तरदायित्वों का निर्देशन करती हैं। समाज के जो शत्रु हैं, जैसे अज्ञान, अन्याय, अभाव तथा आलस्य। इन्हें अपने–अपने सामर्थ्यानुसार उस–उस वर्ण के कार्य विभाग के द्वारा दूर किया जा सकता है। क्योंकि कार्य विभोजित होने से उस कार्य का उत्तम रूपेण सम्पादन हो पायेगा।

वैदिक संस्कृति में यह कार्य गुरुकुलों में आचार्यो द्वारा हुआ करता है। जो जिस कार्य के योग्य होगा, उसे उसी कार्य को वरण करने का निर्देश आचार्य द्वारा किया जाता है। वैदिक संस्कृति त्याग में निहित स्वेच्छावृत्ति को मानती हैं। अपनी इच्छाविरूद्ध बलपूर्वक कराये गये 'त्याग' को वह नहीं मानती। अपनी किसी वस्तु को बलपूर्वक किसी के द्वारा छीन लिया जाना और अपनी किसी वस्तु को वापस न ले पाने की असमर्थता को त्याग कहना, यह त्याग की मूलभावना को न समझना ही है। वैदिक संस्कृति अन्याय सहने को गलत मानती है। इतिहास गवाह है कि महाराज राम ने रावण के अन्याय के विरूद्ध अपने क्षत्रिय धर्म का परिचय देते हुए रावण को पराजित कर उसका अर्जित राज्य उसके भाई बिभीषण को सौंप दिया। उन्हें उस राज्य का किंचित भी मोह नही हुआ, यही त्यागभाव का वास्तविक अर्थ है।

वैदिक संस्कृति में 'धर्म' की मान्यता अतिमहत्त्वपूर्ण है। मनुष्य जन्म का उद्देश्य आत्मा तथा परमात्मा को जानना है। धर्म कोई दिखावे या आडम्बर की वस्तु नहीं हैं। धर्म जीवन में प्रत्येक पद पर और प्रत्येक पल आचरण की वस्तु है। धर्म की मोटी परिभाषा अधर्म से बचना है, क्योंकि पाप न करना, पुण्य का प्रथम प्रयत्न अथवा परिणाम है। आज के आधुनिक युग में धर्म मात्र दिखावे की वस्तु बन गई है। क्योंकि एक तरफ हम धार्मिक होने का दिखावा करते हैं, तो दूसरी ओर पापाचरण में लगे रहते हैं। मनुष्य धर्माचरण तो करना चाहता है, किन्तु दूसरी ओर अधर्म को छोड़ना नहीं चाहता, जिसके कारण आज नये–नये मत–पंथों की बाढ़ आ रही है। क्योंकि हमने धर्म के वास्तविक अर्थ को जाना ही नहीं है। हम तो मात्र धर्म की अमान्यता के डर को भुलाने के लिए धार्मिकता का प्रदर्शन कर रहे हैं। आज के आधुनिक युग में धर्म को हमने फैशन समझ लिया है। महाराज मनु द्वारा निर्दिष्ट धर्म के लक्षणों को हमने कभी जानने और आचरण में लाने का प्रयास ही नहीं किया है। आजकल सभी ओर वैदिक सिद्धान्तों की अवमानना हो रही है।

जिस तरह विज्ञान की मान्यताएँ उसके प्रात्यक्षिकों द्वारा मान्य की जाती हैं, उसी तरह पतंजलि मुनि ने वेदों की मान्यताओं को योगदर्शन द्वारा प्रत्यक्ष कर दिखाया है। अष्टांग योग द्वारा ईश्वर सिद्धि का मार्ग बताया है।

आधुनिक विज्ञान की मान्यताएँ समय–समय पर बदलती रहती हैं। उनमें परिवर्तन, परिवर्धन की आवश्यकता होती है, मगर हमारी योग सम्बन्धी मान्यताओं को हमारे ऋषि, मुनि तथा योगिजनों ने सिद्धकर दिखाया है, हमें मात्र उस तपः पूर्ण मार्ग का अनुकरण करने की आवश्यकता है। योग को जन–जन तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य हमारे महापुरुषों ने कर दिखाया है, आगे उसे अपनाकर अपने जीवन को वैदिक संस्कृति के अनुरूप बनाना हमारा कार्य है। योग ने यम–नियमों के पालन को अतिमहत्त्वपूर्ण माना है, जिससे स्वयं में तथा समाज में अनुशासन प्रस्थापित होगा। वैदिक संस्कृति में पतंजलि मुनि के पाँच यमों को मानव समाज के जीवनरूप भवन का आधारस्तम्भ माना है, जिसके पालन से मनुष्य भोगवादी संस्कृति से छूटकर ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है। यम हैं – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा परिग्रह, जिन्हें जानना अति आवश्यक है।

1) अहिंसा – अहिंसा का अर्थ है हिंसा से बचना। हिंसा तीन प्रकार की होती है – कायिक, वाचिक और मानसिक। अहिंसा आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाती है जो कि वैदिक संस्कृति का सूचक है। वैदिक संस्कृति का भवन इसी अहिंसा के स्तम्भ पर खड़ा है, जो आज की बढ़ती हिंसा की प्रवृत्ति को रोक सकता है और सबके लिए 'जिओ और जीने दो' का पाठ सिखाता है।

2) सत्य – सत्य तो प्रकाश स्वरूप है, सत्य को पतंजलि मुनि ने 'महाव्रत' कहा है। जो मन में हो, वह वाणी से निकलना चाहिए तथा जो वाणी से कह दे, वह कर्म में आना चाहिए। आज जीवन इससे विपरीत चल रहा है। इसका परिणाम हमारे व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन में दिखाई दे रहा है। वैदिक संस्कृति का कहना है 'अनृतात् सत्यं गमय' झूठ से निकलकर सत्य के मार्ग पर चलने की प्रार्थना की गई है।

3) अस्तेय – स्तेय का अर्थ है चोरी व अस्तेय का अर्थ है चोरी न करना। यद्यपि सभी लोग चोरी को बुरा कहते हैं, मगर सूक्ष्मतासे देखा जाये तो सभी लोग किसी ना किसी प्रकार की चोरी करते हुए दिखाई देते हैं। क्योंकि दूसरे की वस्तु छल–कपट से दूसरे के बिना जाने उड़ा लेना या बलपूर्वक छीन लेना चोरी ही है। मगर वैदिक संस्कृति इससे भी आगे जाकर यह मानती है कि चोरी जब पकड़ी जाये, तब चोरी कहलाती है, मगर मन में उसका विचार आना भी चोरी जैसा ही है। अतः 'अस्तेय' के इसी अर्थ को मानना चाहिए।

4) ब्रह्मचर्य – अर्थात् ब्रह्म के समान 'महान बनना।' अपने जीवन को छोटे से बड़ा बनाने का प्रयत्न करना। ब्रह्मचर्य का एक अर्थ यह भी है कि अपनी इन्द्रियों पर संयम रखना और उसमें भी अपनी कामवासना पर विजय पाना।

आज का समाज विषय वासना में डूबा हुआ है, जिसके दुष्परिणाम आज देखने को मिल रहे हैं। हर क्षेत्र में आज सैक्स ही सैक्स दिखलाई पड़ रहा है। आज हम पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर ब्रह्मचर्य के महत्त्व को भूल बैठे हैं। इसके परिणाम स्वरूप बलात्कार जैसी घटनाएँ आज सामान्य होती जा रही हैं। आज राष्ट्रीय दूरदर्शन जैसे प्रसार माध्यमों द्वारा 'कंडोम' का विज्ञापन ज्यादा ही जोर शोर से दिखाया जा रहा है। हमारी सरकार हमें जानवरों से भी गया–बीता समझ रही है, क्योंकि आजतक जानवरों को भी यौन शिक्षा की आवश्यकता नहीं पड़ी, जो कि शिक्षित कहलाने वाले मनुष्यों को आज दी जा रही है। इसके विपरीत संस्कारों को वैदिक संस्कृति के आधार स्तम्भ माने जाने वाले 'ब्रह्मचर्य' की शिक्षा हमारे विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में अनिवार्य करनी चाहिए।

(5) अपरिग्रह – परिग्रह का अर्थ होता है 'संग्रह करना'। अपनी आवश्यकताओं से अधिक वस्तुओं का जुटाना। हमारी संस्कृति त्याग पर आधारित है। संसार का नियम 'अपरिग्रह' का है, छोड़ने का है। अस्तेय के विषय में हमने जाना कि किसी दूसरे की वस्तु का मोह न करना, यह ठीक भी है। बहुत से लोग कहते हैं हम किसी दूसरों की वस्तु का मोह नहीं करते। अपना जो कुछ है, उसी से काम चलाते हैं, मगर वैदिक संस्कृति इससे एक कदम आगे चलकर कहती हैं कि, 'अस्तेय' का पालन करना तो ठीक है, मगर 'अपरिग्रह' का वास्तविक अर्थ अपने अधिकार की वस्तु का स्वेच्छापूर्वक त्याग करना है। आज हम समाज में बहुत लोगों को देखते हैं, जो लोकेषणा में बड़े–बड़े काम चंदा इकट्ठा कर करते हैं। मगर अपनी गाँठ को ढीली नहीं करना चाहते, धन सम्पन्न होते हुए भी न देना 'अपरिग्रह' के वास्तविक अर्थ को न जानना ही है।

ईश्वर ने सृष्टि आरम्भ में ही इसका समाधान वेद द्वारा कर रखा है। जिस प्रकार बाजार में आई नई वस्तु के साथ अल्पबुद्धि, उत्पादक मनुष्य उस वस्तु के व्यवहार का पूर्ण विवरण दे देते हैं, तो ईश्वर बिना ज्ञान के कैसे मनुष्य को सृष्टि में भेज देता?हमें मात्र उस ज्ञान को अपनाने और अध्ययन कर अनुकरण करने की आवश्यकता है। जिज्ञासा मनुष्य से सब कुछ करवा लेती हैं। हमारे सामने पाश्चात्य लोगों का उदाहरण है – वेदों के अध्ययन हेतु उन्होंने भाषा को सीखा और वेदों का अध्ययन कर उसकी वास्तविकता को माना। मगर हाय रे हमारे देश के युवक युवतियाँ! जिन्हें सूर्य उदय देखना भी नसीब नहीं होता, मगर जिस दिन वे सूर्योदय को देख लेंगे, उस दिन से निश्चय ही कुछ अधिक जानने की जिज्ञासा उनमें उत्पन्न होगी, ईश्वर सभी को सद्बुद्धि प्रदान करें।

– श्रद्धा निवास, कटघरपुरा, किल्लेधारूर,
जिला–बीड़

चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा को नव–संवत्सर (नववर्ष) मनाकर गर्व करें

– गंगाशरण आर्य 'साहित्य सुमन'

विश्व में मानव जीवन के इतिहास की काल गणना में प्राचीन परम्परा ही वैज्ञानिक नजर आती है। सम्वत् चाहे किसी नाम से तथा कहीं भी आरम्भ किये गये हों किन्तु इन सबका आरम्भ करने की परम्परा एक ही दिन चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से की जाती रही है। पूरे देश में विभिन्न पर्वों के रूप में इस दिवस को मनाया जाता है। इसमें चेती चाँद का त्यौहार, गुड़ी पड़वा का त्यौहार, उगादी त्यौहार भी इसी दिन मनाया जाता है। नये कार्यों का आरम्भ भी नववर्ष की प्रतिपदा से ही करने की परम्परा आज भी बनी हुई है। नव सम्वत् के साथ ही भारत का प्रत्येक कार्यक्षेत्र चैत्र (अप्रैल) माह के प्रथम दिन से प्रारम्भ होता है। विद्यालयों में बच्चों की नई कक्षाओं का प्रारम्भ भी चैत्र माह से ही होता है। इसे वित्तीय वर्ष भी कहते हैं। लेकिन नववर्ष मनाया जाता है 1 जनवरी को? दरअसल हमारे देशवासियों की गुलामी की मानसिकता की जड़ें इतनी गहरी हो गई हैं कि उनको उखाड़ फेंकना इतना आसान नहीं। हैरानी की बात तो यह है कि गुलामी की दौर में स्वराज्य की लड़ाई के दिनों में भी सबकुछ स्वदेशी था। लेकिन स्वतंत्र भारत में अब सब कुछ विदेशी हो गया है। आर्यावर्त भारत देश का कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि इस पवित्र दिन को हम 'अप्रैलफूल' अर्थात् मूर्ख दिवस बनाने का दिन बताते हैं। भारतीय संवत्सर को जो कि दुनिया का सर्वप्रथम, सर्वश्रेष्ठ एवं नैसर्गिक सम्वत्सर है, झुठलाकर 1 जनवरी विदेशी नववर्ष को हर्षोल्लास के साथ मनाने में हम ही अग्रणीय नहीं हैं बल्कि ये राजनेता भी जनता की इस बेवकूफी में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते हैं। राजनेताओं को स्पष्ट रूप से पता है कि देश की वित्तीय व्यवस्था को संचालित करने वाले वित्तीय वर्ष का प्रथम दिन 1 अप्रैल का दिन होता है फिर भी अंग्रेजियत का भूत इतना चढ़ा है कि 1 जनवरी पर ही नववर्ष की शुभकामनाएँ एवं बधाईयाँ बड़े–बड़े फ्लैक्स बोर्ड लगाकर देते हैं। एक माह पूर्व ही विदेशी नववर्ष की तैयारियाँ भारत में शुरू कर दी जाती हैं। करोड़ों रुपये का खर्चा इस उत्सव के लिए व्यय किया जाता है।

आज हमें स्वाधीन हुए 100 वर्ष भी नहीं हुए हैं और हम अपनी संस्कृति, सभ्यता की घोर उपेक्षा कर रहे हैं, अभी भी राजनैतिक गुलामी सिर पर सवार है। प्राचीन वैदिक संस्कृति के जवाब में विश्व के किसी भी कोने में इतनी आदर्श संस्कृति का उदाहरण मिलना अत्यन्त मुश्किल है। नया वर्ष ईसाईयों के यहाँ इसे न्यू इयर्स डे कहते हैं वहीं 1 जनवरी को होता है। भारत में स्वाधीनता से पूर्व इसका कोई महत्त्व ही नहीं था। आज तो इसके पीछे गाँव से लेकर शहर के बच्चे, बड़े, माता–बहनों के दिमागों में पागलपन सवार है और पश्चिमी सभ्यता की धूल हमारे ऊपर छाई हुई है। यह 21वीं शताब्दी है जो ईसवी संवत् के अनुसार होती है। यदि सृष्टि सम्वत् की दृष्टि से देखेंगे तो सृष्टि को बने हुए 1960853121 वर्ष हो चुके हैं और 122वाँ वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। इससे यह सिद्ध हुआ कि करोड़ों शताब्दियाँ हमने बिताई और लाखों शताब्दी आने वाली है। इतने लम्बे इतिहास को झुठलाकर संसार को केवल मात्र 20 गिनी–चुनी शताब्दी पुराना कहना अपने आपमें बहुत बड़ी भूल है और ईश्वर की व्यवस्थाओं को नकाने का प्रयास है। सृष्टि के रचयिता परमपिता परमात्मा ने वनस्पति एवं सम्पूर्ण जीव–जगत की रचना करने के उपरान्त यहाँ तक कि छहों ऋतुओं को उत्पन्न कर पृथ्वी माता को दुल्हन की तरह सजाकर तत्पश्चात् मनुष्य को उत्पन्न किया। क्योंकि ईश्वर की सारी ही कृतियों में मानव सर्वश्रेष्ठ कृति है। पृथ्वी माता के आंचल में मनुष्य ने सर्वप्रथम अपने नेत्र खोले, उस समय दिसम्बर की कड़कती ठंड नहीं बल्कि वसन्त ऋतु अपनी सुन्दरतम आभा बिखेर रही थी। समझने की बात यह है कि कोई भी इंजीनियर जब किसी इंजन या किसी मशीन का निर्माण करता है तो साथ में जानकारी के लिए एक परिचय पुस्तिका भी देता है जिसमें उसकी सम्पूर्ण जानकारी होती है। उसी प्रकार उस सर्वशक्तिमान महा इंजीनियर ने सृष्टि रूपी मशीन का निर्माण किया तब वेद रूपी ज्ञान उन प्रथम महामानवों (अग्नि, वायु, आदित्य एवं अंगिरा) के अन्तःकरण में दिया। वेद सम्पूर्ण ज्ञान–विज्ञान के भण्डार हैं। वेद ज्ञान के आधार पर हमारे प्राचीन महामनीषियों, ऋषि–मुनियों ने आदि सृष्टि से लेकर आज तक हर पदार्थ का विवरण रखा है। आदि सृष्टि से ही आर्यों में चैत्र मास की शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को ही नववर्ष दिवस के रूप में मनाने की प्रथा प्रचलित है।

सृष्टि सम्वत् के सम्बन्ध में एक और अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत है। इस देश के इतिहास को विदेशी आक्रान्ता जब नष्ट करने लगे तो आर्यों ने इतिहास सुरक्षित करने के लिए सृष्टि के गणित का इतिहास संकल्प के रूप में कंठस्थ कर लिया था जो आज भी व्यवहार में प्रचलित है जिसे नित्यप्रति किसी भी शुभ कार्य विवाह संस्कार आदि करने से पूर्व यज्ञ के समय पुरोहित अपने यजमान से संकल्प करवाते समय बुलवाता है। इस प्रकार सृष्टि के आदि से लेकर मनवन्तर युग–युगान्तर, वर्ष, माह, पक्ष, तिथि, दिन, नक्षत्र, मुहुर्त, लग्न, घड़ी, पल, विपल तक का हिसाब आज तक मौजूद है। ऋतुराज वसन्त में चैत्र शुक्लप्रतिपदा से ही हमारा प्राचीन आर्यावर्तीय सम्वत्सर प्रारम्भ हुआ। दुनिया के महान गणितज्ञ भास्कराचार्य ने भी इसी दिन से ही सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, महीना और वर्ष की गणना करते हुए पंचांग की रचना की थी। इसी दिन ही मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का राज तिलक भी हुआ था। महाराज युधिष्ठिर का भी राज तिलक इसी दिन हुआ था। इसी प्रकार अन्य अनेक ऐतिहासिक घटनाएँ इस शुभ दिन के साथ जुड़ी हैं। आज ही के दिन कलियुग के प्रथम सम्राट परिक्षित के सिंहासनारूढ़ होने का भी दिन है। आज ही के दिन समाज सुधार के युग प्रणेता स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना की थी। अन्त में पाठकों से मेरा नम्र निवेदन है कि विदेशी गुलामी के प्रतीक 1 जनवरी बनावटी नववर्ष का परित्याग करें और अपनी स्वतंत्रता, स्वाभिमान और स्वावलम्बन को ध्यान में रखकर इस अवैज्ञानिक, तर्कहीन तथ्यों पर आधारित ईस्वी सन् को छोड़कर अपने भारतीय सम्वत् विक्रम सम्वत् को ही अपनायें जो वैज्ञानिक और प्राकृतिक तथ्यों पर आधारित है। इस विषय में यही कहना चाहूँगा कि '

'दास्ता की निशानी को नई–पीढ़ी पर से उठाना है।
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही नववर्ष हमें मनाना है।।

इस बार 13 अप्रैल, 2021 को भारतीय नव सम्वत्सर का प्रारम्भ हो रहा है। इस पर्व को स्वाभिमान पूर्वक मनाते हुए एक दूसरे को बधाई देनी चाहिए तथा हर्षोल्लास के साथ वैदिक यज्ञ करके इस दिन का शुभारम्भ करना चाहिए।

– 'चरित्र निर्माण मण्डल', ग्राम–शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली

HOW TO ESTABLISH AS A GRAHSTHI

There are four ashramas as Brahmcharya, Grahstha, Vanprastha & sanyas in the vedic system of living. Our Vedic philosophers being practical men have already thought over the partitions of our life's time. The above mentioned gradation deals with inner joy.

Life is a journey we already know. How to maintain this journey joyous and happy? This is the question which is to be answered in the light of our Ashram living.

First of all you have to become a man and man means to catch up thinking process to act what the righteousness is , to behave what the betterment is to others is so on and so forth to test your credibility in the society. Certainly, you are a human being which differs from other living ones.

You take birth in a family and you are brought up by your parents adopting certain skills to mould favourable to you at all times when your childhood begins. Their love sympathy, affection wrapped up with aesthetic sense give you turnings to prepare you physically, mentally spiritually and socially. All the impressions you catch in a normal way. You become a part and parcel of your family . In other words you are a member of society. At the age of 25 years you become a good thinker, a good contemplater. You discern the good from the evil. If you do good, you will be esteemed. you understand the etiquette, you understand your responsibilities for your parents, for the neighbours and for the nation. You may become patriot filled with utmost feelings to your country. What a philanthrophic idea you stage up. Really over the age of 21, you are physically and mentally ripened. Under 21 your decisions may mislead you. The changes of your body and brain will tell you all. So at the age of 25 you are perfectly capable for the age to get married and produce children. Female body demands the limit of 16 to 18 years of age on medical ground.

Secondly, it is proper on your part when you are employed or do some business of your own and your Conscience declares you to be a source of independently earnings to maintain your Grahstha Ashram with skillful handlings. Then you are respectable in the society and dexterious to conduct your own family. It means you have learnt lore (vidya) of how to earn and how to spend. You might have undergone the Brahmacharya Ashram first and prepared youself well because of your tactics of knowledge and experience. Only you have to learn how to overcome the sexual urge and let it flow in constructive channels of life . This can be the mental level at the age of maturity that is 25 years.

BY B.R.SHARMA VIBHAKAR

श्री छोटेलाल इण्टर कॉलेज, अटौर नंगला, फिरोजमोहनपुर, जिला–गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) के प्रांगण में अथर्ववेद पारायण यज्ञ एवं विविध सम्मेलनों का हुआ भव्य आयोजन

दिनांक 24 से 28 फरवरी, 2021 तक हजारों लोगों ने सम्मिलित होकर वेद ज्ञान का उठाया लाभ

युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती रहे यज्ञ के ब्रह्मा एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने किया ध्वजारोहण

दिनांक 24 से 28 फरवरी, 2021 तक आर्य समाज अटौर, नंगला, फिरोज मोहनपुर, जिला–गाजियाबाद द्वारा श्री छोटेलाल इण्टर कॉलेज के प्रांगण में अध्यात्म, वैदिक संस्कृति, मानव कल्याण, समाज सुधार एवं राष्ट्रवाद से ओत–प्रोत विविध सम्मेलनों तथा अथर्ववेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। आयोजन में प्रतिदिन प्रातः 5.30 से 7 बजे तक योग साधना एवं प्राणायाम शिविर, 7.30 से 9.30 बजे तक प्रतिदिन यज्ञ का कार्यक्रम रहा। उसके पश्चात् 24 फरवरी को प्रातः 10 से 12 बजे तक तथा सायं 4.30 से 6.30 तक पूजा का यथार्थ स्वरूप एवं एक शाम ऋषि के नाम विषय पर कार्यक्रम चला। 25 फरवरी को संन्ध्या उपासना की वैदिक पद्धति तथा 'गृहस्थ आश्रम, श्रेष्ठ आश्रम' विषय पर तथा 26 फरवरी को आध्यात्मिक सम्मेलन एवं समाज सुधार सम्मेलन। इसी प्रकार 27 फरवरी को वेद सम्मेलन, संस्कृति सम्मेलन एवं गोरक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। 28 फरवरी को यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् भजनों का विशेष कार्यक्रम रहा।

24 फरवरी को प्रातः 9.30 बजे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने ओ३म् ध्वज आरोहण कर इस पांच दिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन किया। यज्ञ के ब्रह्मा युवा संन्यासी ओजस्वी वक्ता स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी ने पांचों दिन यज्ञ का संचालन करने के साथ–साथ अपने प्रवचनों से श्रोताओं को लाभान्वित किया। 26 तथा 27 फरवरी को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के प्रभावशाली प्रवचन श्रोताओं को सुनने को मिले। आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य बिजनौर, बहन अंजलि आर्या, श्री वेदपाल आर्य वैदिक सिनौली, बागपत आदि के द्वारा पांचों दिन मन–भावन भजनों की धूम मची रही। कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की ब्रह्मचारिणियों ने सस्वर वेद पाठ करके अथर्ववेद पारायण यज्ञ को अत्यन्त मनोयोग से सम्पन्न कराया।

इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से जिला आर्य प्रतिनिधि सभा गाजियाबाद के संरक्षक श्री श्रद्धानन्द शर्मा, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपमंत्री श्री ज्ञानेन्द्र आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा के मंत्री श्री सत्यवीर चौधरी, जिलासभा के मंत्री श्री सेवाराम त्यागी, श्री सौदान सिंह आर्य खानपुर मेरठ, श्री विश्वबन्धु आर्य मोदीनगर आदि महानुभाव भी सम्मिलित हुए तथा अपने विचार प्रस्तुत किये।

इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम के मुख्य आयोजक श्री रामपाल आर्य पूर्व प्रधान नंगला फिरोज मोहनपुर तथा संयोजक श्री कृष्णपाल आर्य थे। उनके साथ उनके छोटे भाई श्री सतीश आर्य एवं श्री श्याम सुन्दर आर्य का भी कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष सहयोग रहा। गाँव के प्रतिष्ठित श्री पवन चौधरी, श्री वीरपाल चौधरी, डॉ. वीरेन्द्र आर्य आदि का भी इस कार्यक्रम में विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम की विशेषता यह थी कि इसमें गाजियाबाद, मेरठ, बागपत तथा अन्य क्षेत्रों से भी भारी संख्या में आर्य समाज के कार्यकर्ता तथा प्रतिष्ठित महानुभाव पधारे हुए थे। सबके दोनों समय के भोजन तथा प्रातराश की यजमान परिवार की ओर से समुचित व्यवस्था की गई थी।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने समाज सुधार सम्मेलन, वेद सम्मेलन, संस्कृति व गोरक्षा सम्मेलन में विचार प्रकट करते हुए लोगों का आह्वान किया कि वर्तमान समय में वैदिक विचारधारा, वैदिक जीवनशैली, वैदिक शिक्षा प्रणाली तथा वैदिक संस्कारों की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गई है, क्योंकि पिछले एक वर्ष से जिस कोरोना या कोविड–19 नामक महामारी से पूरा विश्व पीड़ित है, ऐसे समय में वैदिक संस्कृति के मुख्य स्तम्भ यज्ञ, योग एवं आयुर्वेद से लोगों को विशेष राहत मिली है। दुनिया के समस्त तन्त्र–मन्त्र, जादू–टोने, मंदिर–मस्जिद, गिरजे और गुरुद्वारे कोरोना के सामने बन्द कर दिये गये। उन पर ताले लगा दिये गये और लोगों को इन स्थानों पर जाने से रोका गया। इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि कोरोना के भयंकर संक्रमण को रोक पाने में ये सभी धर्मस्थल और इनमें किये जाने वाले पूजा–पाठ, दी जाने वाली अजान, पढ़ी जाने वाली प्रेयर और अन्य धार्मिक अनुष्ठान पूरी तरह निरर्थक सिद्ध हुए। किन्तु यह गौरव वैदिक संस्कृति के मुख्य स्तम्भ यज्ञ, योग और आयुर्वेद को ही प्राप्त हुआ कि पूरी दुनिया ने कोरोना से लड़ने के लिए रोग प्रतिरोधक शक्ति तथा फेफड़ों को मजबूत बनाये रखने के लिए यौगिक क्रियाओं और आयुर्वैदिक औषधियों तथा हरबल काढ़ा ही उपयोगी सिद्ध हुआ। इसी प्रकार देश–विदेश में जहाँ–जहाँ आर्य समाज की इकाईयाँ मौजूद हैं वहां पर यज्ञ करने और कराने पर कहीं भी प्रतिबन्ध नहीं लगा। क्योंकि यज्ञ की प्रक्रिया पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है, तर्क संगत है तथा पर्यावरण के लिए उपयोगी है।

स्वामी जी के व्याख्यानों से श्रोताओं में अत्यन्त उत्साह एवं जिज्ञासा उत्पन्न हुई और व्यक्तिगत रूप से मिलकर शंकाओं का समाधान भी लोगों ने प्राप्त किया। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी ने वैदिक मान्यताओं की सरल समीक्षा एवं प्रस्तुति देकर श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने पूजा का यथार्थ स्वरूप संन्ध्या, उपासना की वैदिक पद्धति, वैदिक अध्यात्मवाद, समाज सुधार, वेद एवं गौरक्षा सम्मेलन में अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत करके जनता का मार्गदर्शन किया। अपने धारावाहिक व्याख्यानों में स्वामी जी ने इन वैदिक मान्यताओं की सरल एवं प्रभावी व्याख्या प्रस्तुत की।

श्री कुलदीप आर्य, श्री वेदपाल आर्य, विदुषी बहन अंजलि आर्या के भजनों ने श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया और विविध विषयों पर अपनी प्रभावशाली शैली में न केवल गीत व भजनों से बल्कि अपनी व्याख्या से भी अपने तेजस्वी व्यक्तित्व का परिचय दिया। उनके भजनों से प्रभावित होकर अनेक महानुभावों ने धनराशि भेंटकर उन्हें सम्मानित भी किया। इस समूचे कार्यक्रम के व्यय का भार महाशय रामपाल आर्य के परिवार ने अपने कंधों पर उठाया। इस आयोजन के लिए उन्होंने कोई धन–संग्रह या दानराशि प्राप्त नहीं की। ऐसे समर्पित एवं सिद्धान्तनिष्ठ आर्य परिवार देखने में कम ही मिलते हैं।

श्री रामपाल सिंह आर्य की सुपौत्री आयु. काजल के शुभ विवाहोत्सव के उपलक्ष्य में प्रस्तुत किया गया

आदर्श विवाह का एक अनुपम उदाहरण

आयु. काजल सुपौत्री श्री रामपाल सिंह व सुपुत्री श्री कृष्णपाल आर्य का पाणिग्रहण संस्कार निसताली ग्राम निवासी श्री सुभग सिंह के सुपुत्र चि. आदित्य के साथ पूर्ण वैदिक रीति से 28 फरवरी, 2021 को सम्पन्न हुआ। इस पाणिग्रहण संस्कार की विशेषता यह रही कि इसमें वैदिक परम्पराओं का पूरी निष्ठा एवं श्रद्धा के साथ पालन किया गया। पूर्ण रूप से दहेज रहित, नाच गाने, बैंड बाजे पर होने वाले अपव्यय से रहित और सायंकाल गोधूलि के समय सम्पन्न हुए इस विवाह संस्कार का पौरोहित्य आर्य जगत की प्रसिद्ध विदुषी कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की संस्थापक संचालक एवं आचार्या डॉ. सुमेधा जी ने किया। एक विदुषी के द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुए इस विवाह उत्सव की पूरे क्षेत्र में विशेष चर्चा रही। समस्त आडम्बरों एवं फिजूलखर्चियों से हटकर समारोह पूर्वक आयोजित किये गये इस विवाह संस्कार में जहाँ डॉ. सुमेधा जी ने विवाह की सभी प्रक्रियाओं की सुन्दर एवं सरल व्याख्या करके लोगों को विवाह के महत्त्व को गम्भीरता से दर्शाया, वहीं विभिन्न प्रक्रियाओं को अपने भजनों द्वारा श्री कुलदीप आर्य ने श्रोताओं और दर्शकों को इतना प्रभावित किया कि लोग संस्कार को देखकर मन्त्रमुग्ध हो गये।

वर–वधु के रूप में यज्ञवेदी पर विराजमान सौ. काजल एवं चि. आदित्य को विद्वानों तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपना सात्विक आशीर्वाद दिया। वहीं दोनों पक्षों के गणमान्य महानुभावों ने भी उन्हें आशीर्वाद तथा शुभकामनाएं देकर सफल गृहस्थ की कामना की। ये विवाह कन्या पक्ष एवं वर पक्ष के परिवारों का मिलन और दो योग्य एवं तेजस्वी युवा दम्पत्ति का परिणय सूत्र में बंधकर एक अद्भुत उदाहरण बना। ऐसे आदर्श विवाहों से सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए। सार्वदेशिक सभा की ओर से दोनों परिवारों एवं युवा दम्पत्ति को बहुत–बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की जाती हैं।

आर्य वीर दल जोधपुर के तत्वावधान में शहीदे आजम भगतसिंह बलिदान दिवस के अवसर पर मशाल जुलूस निकालकर आर्य वीरो ने शहीदों को दी श्रदांजलि

भगत सिंह ने देश के युवाओं में क्रांति की भावना जगाई

– श्रीमती मनीषा पंवार 'विधायक'

आर्य वीर दल जोधपुर के तत्वावधान में शहीदे आजम भगतसिंह बलिदान दिवस के अवसर पर मंगलवार को मशाल जुलुस निकाला गया। जुलूस सोजती गेट राजीव गांधी सर्कल पहुंचकर संपन्न हुआ।

जालोरी गेट चौराहे पर मशाल प्रज्ज्वलित करते हुए शहर विधायक मनीषा पंवार ने कहा कि जंगे आजादी के सबसे कम उम्र के युवा क्रांतिकारी और युवाओं के प्रेरक शहीदे आजम भगतसिंह ने आर्य समाज से प्रेरणा लेकर देश के लिए बलिदान दिया। इस दौरान जालोरी गेट युवा ग्रुप की तरफ से राजस्थान बार एसोसिएशन के नवनिर्वाचित अध्यक्ष नाथूसिंह राठौड़, फाइनेंस फेडरेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष आदर्श शर्मा, एडवोकेट ताहिर का एडवोकेट करनी सिंह ने माला पहनाकर स्वागत किया। जोधपुर इंडस्ट्री एसोसिएशन के अध्यक्ष व कांग्रेस नेता सुनील परिहार, पूर्व वीसी केडी स्वामी ने कार्यक्रम की सराहना की। जालोरी मुख्य चौराहा से नई सड़क राजीव गांधी चौराहा तक शहीदों के जयकारों और देश भक्ति गीतों के साथ मशाल जुलूस का सुव्यवस्थित आयोजन किया गया। इस दौरान मार्ग में रेलवे यूनियन, इंटेक, सोजती गेट व्यापारी संगठनों सहित अन्य ने जगह जगह फूलों की बौछार से जुलूस का स्वागत किया गया।

कार्यक्रम के उपप्रधान नारायण सिंह आर्य ने कहा कि शहीद भगत सिंह और आर्य समाज का गहरा रिस्ता रहा है भगतसिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह महर्षि दयानंद सरस्वती के अनन्य भक्त थे और लाहौर आर्य समाज के प्रधान थे आर्य समाज और क्रांतिकारियों की बैठके भगतसिंह के घर मे होती थी तो प्रारम्भिक संस्कारो से ही देश भक्ति से प्रेरित रहे भगतसिंह ने पूरे देश मे आजादी की लहर जगा दी। उनसे प्रेरित होकर हजारों हजारों युवा देश के लिए फांसी के दामन को हंसते हंसते पहनने लगे और शहीदों की शहादत से देश 1947 को आजाद हो गया। प्रतिपक्ष नेता गणपत सिंह चौहान ने कहा कि आज के युवाओं को चाहिए कि देश की आजादी,भाईचारे, अमन, प्रेम को बनाये रखे और शहीदों की शहादत को आपसी द्वेष से व्यर्थ ना जाने दे। आर्य वीर दल राजस्थान के अधिष्ठाता संचालक भंवरलाल आर्य, हरीसिंह आर्य, उम्मेद सिंह, जितेंद्र सिंह ने कहा की मदनसिंह जी आर्य और रामसिंह जी आर्य की प्रेरणा से आज भी आर्य वीर दल भगतसिंह के सपनो को साकार करने का हर संभव प्रयासरत कर रहा है, उन्होंने कहा कि वो धर्म से हो, नशा मुक्ति, या फिर जन विरोधी कार्यो के खिलाफ हमेशा क्रांतिकारी आंदोलन करने का रहा है और इस नक्शे कदम पर आर्य वीर दल निरन्तर चलता रहेगा। महामंत्री लक्ष्मण सिंह आर्य ने देश भक्ति तराने से माहौल को क्रान्तिमय कर दिया।

कॉमरेड नेता गोपीकिशन, पार्षद शैलजा परिहार सहित अन्य अतिथियों की मौजूदगी में जुलूस ओउम ध्वज, शहीदों के जयकारों के नारे हाथ मे लेकर जालोरी गेट से रवाना होकर महात्मा गांधी हॉस्पिटल से रणछोड़ जी मंदिर होते हुवे रेलवे स्टेशन से सोजती गेट से नई सड़क पहुच कर सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का संचालन डॉ लक्ष्मण सिंह आर्य ने किया।

कार्यक्रम अंतिम कड़ी में आर्य वीर दल जोधपुर के अध्यक्ष हरिसिंह आर्य और संचालक उम्मेद सिंह आर्य ने सभी आगन्तुक अथितियों का आभार धन्यवाद व्यक्त किया।

इस दौरान मदनगोपाल आर्य, जितेंद्र सिंह आर्य व पूनम सिंह शेखावत, प्रधान गणपत सिंह आर्य, द्वारकाप्रसाद, गजेसिंह भाटी, विनोद गहलोत, भंवरलाल हटवाल, हेमंत शर्मा, पुनाराम, जयदीप सिंह, महेश आर्य, अब्दुल जरीफ, भरत कुमार नवल, विकास कार्य, एडवोकेट चेनाराम आर्य, राजेश गोदारा, रूप सिंह पीडिहार, कुलदीप सिंह, किशोर सिंह, सहित आर्य वीर, सामाजिक कार्यकर्ता तथा शहर के प्रबुद्ध सभ्रांत जन मौजूद रहे।

ओ३म्

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

हमारे पूज्य चरणों के जन्मदिन का सादर निमंत्रण

प्रिय आत्मीयजनों– विगत पूरा साल कोरोना के कारण अस्त–व्यस्तता में ही बीता। पूज्य चरणों का प्रियतम दुर्लभ शारद यज्ञ हमने उसी कोरोना काल में पूज्य स्वामी आर्यवेश जी तथा पूज्य स्वामी सवितानंद जी महाराज के दिशा–निर्देश में, दिव्यजनों, दिव्यात्माओं, देवों, पितरों तथा पूज्य चरणों की छाया तले, परमपिता परमात्मा की अपार अनुकम्पा से तथा आप लोगों के भरपूर सहयोग से सुखपूर्वक सम्पन्न किया। यद्यपि संख्याबल की कमी रही, फिर भी उसकी भव्यता में, उसके आकर्षण में कोई कमी नहीं रही। बहुत ही शांत वातावरण में सम्पूर्ण यज्ञ के कार्यकाल में अलौकिक आनंद का संवर्षण होता रहा, जिससे मन प्रफुल्लित, शरीर रोमांचित और हृदय आनन्दातिरेक से भरा रहा।

अब कोरोना महामारी के सघन बादल कुछ कम से हो गए हैं। यद्यपि अभी भी आकाश में छुट–पुट बादलों के समान उसका आतंक कुछ हद तक व्याप्त है। लेकिन समाज के सभी क्रियाकलाप चलने शुरू हो गए हैं। दहशत के वातावरण से बाहर निकल कर लोगों ने अपनी गतिविधियां आरंभ कर दी हैं। छिन्न मोह प्राप्त स्मृति वाले अर्जुन के शब्दों में :–

नष्टोमोह स्मृतिलब्धा त्वतप्रशादात् मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसंदेहः करिष्येवचनं तव।।

संकटकाल समाप्त हो गया है। प्रभो आपकी कृपा से हमें अपने कर्तव्य कर्मों का ज्ञान हो गया है।

अब हम भय व आशंका से रहित हो गए हैं। आखिर कब तक हम भय के वातावरण में दुबके रहते। अपने कर्तव्यों से कब तक विमुख रहते। बहुत हो गया है और नहीं होगा। अब हम आपके द्वारा निर्दिष्ट अपने कर्तव्य कर्मों के सम्पादन में लग जाएंगे। कहकर सारे के सारे मनुज समाज की गतिविधियां आरंभ हो गई हैं।

हम लोगों ने भी अपनी गतिविधियों के प्रारंभन के साथ 3, 4, 5 मई 2021 को अपने पूज्य चरणों के जन्मदिन को भव्य रूप से मनाने का उपक्रम करने का मन बना लिया है। आप सभी आत्मीयजनों को इस विषयक सूचना दे रहे हैं। तथा उस कार्यक्रम को उत्साह व उमंग के साथ सम्पन्न करने के लिए, उसमें अपना भरपूर सहयोग देने के लिए, उसमें अपनी उपस्थिति दर्ज करने के लिए हम आप लोगों को आमन्त्रित भी कर रहे हैं। उन दिनों वार्षिक परीक्षाओं का समय भी है, उसी के अनुरूप कार्यक्रम की समय सारिणी बनाई जा रही है।

3, 4 मई, 2021

प्रातः : 6 बजे से 7:30 बजे तक यज्ञ,
: 7:30 बजे से 8:15 बजे तक भजन,
: 8:15 बजे से 9 बजे तक उपदेश
सायं : 3:30 बजे से 4:45 बजे तक यज्ञ,
: 4:45 बजे से 6 बजे तक भजन,
: 6 बजे से 6:45 तक उपदेश, 6:45 बजे से 7 बजे तक संध्या व शांतिपाठ

5 मई, 2021

प्रातः : 6 बजे से 7:30 बजे तक यज्ञ,
: 7:30 बजे से 8:30 बजे तक भजन,
: 8:30 बजे से 9:30 बजे तक उपदेश,
: 9:30 बजे से 10बजे तक पूर्णाहुति का कार्यक्रम।

10 बजे से प्रसाद वितरण, जलपान और कार्यक्रम की समाप्ति।

निवेदक
आचार्य महावीर सिंह एवं प्रबंधक समिति दयानंद मठ चम्बा
94180–12871, 98050–22871

संयोजक
स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मंडल तथा महर्षि दयानंद आदर्श विद्यालय के सभी सदस्यगण

आर्य समाज करनाल रोड, कैथल के मंत्री एवं जिला वेद प्रचार मण्डल के प्रधान प्रसिद्ध समाजसेवी श्री हरिकेश राविश एडवोकेट के ज्येष्ठ पुत्र

श्री सुरेन्द्र सिंह राविश एडवोकेट का असामयिक निधन

आर्य समाज करनाल रोड, कैथल के मंत्री एवं जिला वेद प्रचार मण्डल कैथल के प्रधान, प्रसिद्ध समाजसेवी श्री हरिकेश राविश एडवोकेट के ज्येष्ठ पुत्र श्री सुरेन्द्र सिंह राविश एडवोकेट का गत दिनों असामयिक निधन हो गया। श्री सुरेन्द्र सिंह एडवोकेट 49 वर्ष के थे। हृदयाघात से उनकी असमय मृत्यु से सभी आर्यजन एवं पारिवारिकजन अत्यन्त व्यथित हैं। श्री सुरेन्द्र सिंह के पिता श्री हरिकेश राविश एवं उनकी माता श्रीमती चन्द्रसुखी आर्या एक धार्मिक एवं परोपकारी दम्पत्ति हैं। समाज के कार्यों में वे सदैव बढ़–चढ़कर भाग लेते हैं। ज्येष्ठ पुत्र के निधन से निःसंदेह उन्हें तथा उनके पूरे परिवार को जो आघात मिला है और जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति सम्भव नहीं है। श्री सुरेन्द्र सिंह अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी एवं दो पुत्र छोड़कर गये हैं। उनके छोटे भाई श्री नरेन्द्र राविश जी पेशे से वकील हैं तथा उनकी बहन डॉक्टर हैं। एक शिक्षित एवं संभ्रान्त परिवार के ज्येष्ठ सदस्य के निधन का समाचार सुनकर सभी आर्यजनों में भी अत्यन्त शोक एवं दुःख की लहर दौड़ गई। 26 मार्च, 2021 को प्रातः 9 बजे उनके निवास पर शांति यज्ञ में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष स्वामी आदित्यवेश जी सम्मिलित हुए और परिवार को सात्वना दी। मध्यान्ह 2 बजे श्री सुरेन्द्र सिंह की स्मृति में आर्य समाज करनाल रोड, कैथल में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में सभा प्रधान स्वामी

स्व. श्री सुरेन्द्र सिंह राविश एडवोकेट

आर्यवेश जी के अतिरिक्त सर्वश्री स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य समाज के प्रधान श्री बृजपाल कालड़ा जी, श्री चरण सिंह एडवोकेट, श्री नफेसिंह बेरवाल एडवोकेट, श्री राव सुरेन्द्र सिंह, श्री वी.एल. भारद्वाज, श्री मनोज एडवोकेट आदि ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की। आर्य समाज के पुरोहित श्री कृष्ण कुमार आर्य ने यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का संयोजन किया। इस अवसर पर श्री मनीराम आर्य, श्री सत्यवीर आर्य, मा. श्यामलाल आर्य, श्री अमित गुप्ता, श्री पुष्पेन्द्र सिंह आदि के अतिरिक्त नगर के सभी आर्य समाजों के पदाधिकारी, विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं समस्त परिवारजन उपस्थित थे।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि श्री सुरेन्द्र सिंह एक उत्साही, ऊर्जावान एवं दृढ़ संकल्प से ओत–प्रोत व्यक्ति थे। उनकी अनेक योजनाएँ थीं जिन्हें वे भविष्य में क्रियान्वित करना चाहते थे। किन्तु ईश्वर की व्यवस्था एवं नियम के समक्ष मनुष्य को नतमस्तक होने के सिवाय और कोई विकल्प उपलब्ध नहीं है। स्वामी जी ने सभी परिवारजनों को सार्वदेशिक सभा की ओर से सांत्वना देते हुए परमात्मा से प्रार्थना की कि शोक संतप्त परिवारजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति तथा दिवंग आत्मा को सद्गति प्रदान करें। शांति पाठ के साथ सभा समाप्त हुई। श्रद्धांजलि सभा के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी ने परिवारजनों के साथ बैठकर चर्चा की और उनका बोझ हल्का करने का प्रयत्न किया।

आर्य संन्यासी स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबू पर्वत के संस्थापक त्यागी तपस्वी आर्य संन्यासी

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी का निधन

समूचे आर्य जगत को यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि आर्य समाज संगठन के त्यागी, तपस्वी संन्यासी एवं आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबू पर्वत (राज.) के संस्थापक श्रद्धेय स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती का 28 फरवरी, 2021 को प्रातः 3 बजे निधन हो गया है। स्वामी धर्मानन्द जी आर्ष शिक्षा प्रणाली के एक मजबूत स्तम्भ थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के माध्यम से अनेक विद्यार्थियों को वैदिक संस्कृति की शिक्षा देकर उनको सुयोग्य विद्वान के रूप में निर्माण किया जो वर्तमान में आर्य समाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ऐसे कर्मठ एवं विद्वान् संन्यासी का अचानक निधन आर्य समाज संगठन एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्रद्धेय स्वामी धर्मानन्द जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि स्वामी धर्मानन्द जी ने आर्ष परम्परा के संरक्षण और समुन्नयन के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। वे गुरुकुलीय शिक्षा के प्रबल पोषक थे। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति एवं सदगति प्रदान करें तथा आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय के समस्त कार्यकर्ताओं एवं स्वामी जी के शुभचिन्तकों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

संस्कृत साहित्य में प्रसिद्ध श्लोक है–

जीवन्ति च म्रियन्ते च मद्विधा क्षुद्रजन्तवः।
अनेन सदृशो लोके न भूतो न भविष्यति।।

अर्थात् – हमारे जैसे लाखों छोटे–छोटे जन्तु प्रतिदिन जन्म लेते हैं और मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं, परन्तु इनके समान संसार में न हुआ न होगा। यह कहावत स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के प्रति अक्षरशः घटित होती हैं।

वीरभूमि हरियाणा प्रदेश के हिसार जनपद के अन्तर्गत खाबड़ा कला ग्राम में आज से 84 वर्ष पूर्व पूज्य स्वामी जी का जन्म चौधरी जियाराम जी बैन्दा के घर दिनांक 25 सितम्बर 1937 को माता चावली देवी जी के कोख से हुआ था। चौधरी जियाराम जी बैन्दा एवं माता चावली देवी को प्रताप सिंह, शान्ति, पृथ्वीसिंह (स्वामी जी), छोटूराम, रामचन्द्र (पूर्व सांसद) व सुमित्रा, इन चार पुत्ररत्नों व दो पुत्रियों की प्राप्ति हुई।

पृथ्वीसिंह ने अपने गॉव में कक्षा–8 तक अध्ययन किया, कक्षा–10 एवं कक्षा–12 का अध्ययन फतेहाबाद में किया, तत्पश्चात् दयानन्द कॉलेज, हिसार में आपने B.A तृतीय वर्ष तक अध्ययन किया, कॉलेज में अध्ययन करते हुए आपने डी. ए. वी. कॉलेज द्वारा आयोजित होने वाली धर्मशिक्षा की कई परीक्षाएं प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। आपके गॉव में प्रतिवर्ष आर्यसमाज के भजनोपदेशक उपदेश हेतु पधारते थे। उनके आवास व भोजन की व्यवस्था आपके परिवार में ही होती थी। आपके पिताजी एवं चाचा रुपराम जी दृढ़ आर्यसमाजी थे। आपके चाचाजी ने विवाह नहीं किया था व पूरे दिन वैदिक, आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय में निरत रहते थे।

गृहत्याग – योगदर्शन के विशेष अध्ययन के फलस्वरुप आपके हृदय में वैराग्य के अंकुर प्रस्फुटित हुए और दिनांक 22 सितम्बर 1972 को सायं 7 बजे गृह का त्याग किया। गृहत्याग से पूर्व उस समय की सामाजिक रीति के अनुसार 25 वर्ष की आयु में आपका विवाह हो गया था, इस विवाह से आपके तीन पुत्र भी हुए। गृहत्याग के समय आपकी आयु 35 वर्ष की थी। गृहत्याग के पश्चात् उत्तरप्रदेश के अनेकों आश्रमों में आप योगाभ्यास हेतु गये। देहरादून के तपोवन आश्रम की ऊपर वाली कुटिया में भी आपने कई दिनों तक निवास करके योगाभ्यास किया। उन दिनों ऋषिकेश में स्वामी योगेश्वरानन्द जी ने अपने आश्रम में एक उपदेशक विद्यालय प्रारम्भ किया था, इस विद्यालय के आचार्य चन्द्रदेव जी थे (आप गुरुकुल झज्जर के स्नातक हैं व वर्तमान में स्वामी चन्द्रवेश जी के नाम से प्रसिद्ध हैं तथा संन्यास आश्रम गाजियाबाद में निवास कर रहे हैं) इन्हीं आचार्य चन्द्रदेव जी ने आपको नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा देकर ब्रह्मचारी कपिलदेव नाम प्रदान किया।

आबूपर्वत में आगमन – उत्तर प्रदेश में भ्रमण करते हुए आबूपर्वत के वेदधाम निवासी आर्य संन्यासी स्वामी काव्यानन्द जी से आपका सम्पर्क हुआ। स्वामी काव्यानन्द जी की स्वीकृति प्राप्त करके आपने इसी परिसर में आर्यगुफा नामक एक कुटिया का निर्माण करवाया व 6 वर्ष तक इस स्थान पर ही रहते हुए घोर तपस्या एवं योगाभ्यास करते हुए आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय किया। यहॉं रहते हुए ही आपके मन में विचार उत्पन्न हुआ कि आबूपर्वत में भी आर्यसमाज की स्थापना होनी चाहिए। तब नक्की झील के उत्तरी तट पर आपने चिन्तामणि नामक साधु की गुफा के समीप आर्यसमाज की स्थापना की, तब यहॉं के पौराणिक मठाधीशों ने बहुत विरोध किया था, स्वामी जी पर आक्रमण किया गया, पुलिस थाने में केस भी दर्ज हुए थे। किन्तु इस नर शार्दूल ने सभी विरोधियों को परास्त करते हुए ऐतिहासिक पर्वतीय स्थल आबूपर्वत पर आर्य समाज मन्दिर का सफलतापूर्वक निर्माण करवाकर वैदिक धर्म के पवित्र ओम् ध्वज को आरोपित किया।

संन्यास दीक्षा – दिनांक 17 जून 1984 को पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (गुरुकुल झज्जर) ने आपको संन्यास दीक्षा देकर स्वामी धर्मानन्द सरस्वती नाम प्रदान किया।

आर्श गुरुकुल की स्थापना – संन्यास दीक्षा के बाद स्वामी जी ने गुरुकुल की स्थापना का दृढ़ निश्चय करके उपयुक्त भूमि की खोज आरम्भ की, आबूपर्वत के अलग–अलग स्थानों पर कई जमीनों को देखने के पश्चात् एक हजार वर्ष प्राचीन विश्व प्रसिद्ध देलवाड़ा जैन मन्दिर से एक किलोमीटर की दूरी पर अरावली गिरीमालाओं के मध्य पन्द्रह बीघा भूमि दानदाताओं के सहयोग से खरीदी गई, वर्तमान में यहीं पर गुरुकुल स्थित हैं। यह स्थान विद्याध्ययन व योगाभ्यास हेतु यजुर्वेद के निम्न मन्त्र के अनुरुप है ''उपह्वरे गिरिणां संगमे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत।।'' (यजु. २६/१५) अर्थात् जो मनुष्य पर्वतों के निकट और नदियों के मेल में योगाभ्यास से ईश्वर की और विचार से विद्या की उपासना करे वह उत्तम बुद्धि वा कर्म से युक्त विचारशील बुद्धिमान् होता है।

आर्षविद्या के प्रचारक मूर्धन्य आर्य संन्यासी पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (गुरुकुल झज्जर) के करकमलों द्वारा 1 जून 1986 को गुरुकुल का शिलान्यास किया गया। इस कार्यक्रम में उपस्थित आर्य सज्जनों ने स्वामी जी से पूछा इस बीहड़ वन में जहॉं 50 व्यक्तियों के ठीक से बैठने का भी स्थान नहीं हैं, इस स्थान पर गुरुकुल का निर्माण कैसे होगा ? तब दृढ़ निश्चयी स्वामी जी ने कहा कि परमात्मा की कृपा से सब कार्य समय पर सम्पन्न हॉंगे। 1987,1988,1989 तीन वर्ष तक आबूपर्वत में वर्षा नहीं हुई थी, पुनरपि देलवाड़ा से गुरुकुल तक गाड़ी आने हेतु कच्चे मार्ग का निर्माण, 600 फिट नीचे झरने के समीप कुंए का निर्माण, एक हॉल, तीन कमरों एवं तीन गुफाओं का निर्माण करवाकर 27 मई, 1990 रविवार को छात्रों के प्रवेश व उपनयन व वेदारम्भ संस्कार के साथ गुरुकुल में पठन–पाठन का विधिवत् शुभारम्भ हुआ।

मुझ लेखक को भी गुरुकुल के प्रथम सत्र का विद्यार्थी होने का सौभाग्य प्राप्त है।

सफल संचालक –जून 1990 में गुरुकुल प्रारम्भ होने के पश्चात गुरुकुल के भवन निर्माण एवं संचालन हेतु गुजरात एवं राजस्थान के विविध नगरों में प्रवास करके वहॉं के आर्य सज्जनों को प्रेरणा प्रदान करके दान लाना, गुरुकुल के 32 कमरों का निर्माण करवाना, गौशाला का निर्माण करवाकर 50 से 60 गीर नस्ल की गायों को लाकर उनका संवर्धन व संरक्षण करना, पाकशाला, भोजनशाला, दो स्नानागार, चार जलागार, शौचालय आदि समस्त आवश्यक भवनों का निर्माण कार्य पूज्य स्वामी जी ने ही सम्पन्न किये थे। गुरुकुल के परिसर में ही सम्पूर्णरुप से संगमरमर के प्रस्तर से निर्मित बारह स्तम्भों की एक अनुपम यज्ञशाला का निर्माण भी कराया गया। पूज्य स्वामी जी के तप एवं पुरुषार्थ के कारण गुरुकुल में किसी भी भौतिक वस्तु की कमी नहीं हैं।

गुरुकुल की विशेषताएँ – आबूपर्वत जैसी प्राचीन रमणीय तपस्थली की पर्वतमालाओं के मध्य सुरम्य घाटी में 15 बीघा का विशाल वृक्षों से सुसज्जित हरा–भरा परिसर। सात्विक भोजन। विद्वान् आचार्यो द्वारा अध्यापन कार्य। चार हजार पुस्तकों का विशाल पुस्तकालय, कम्प्यूटर एवं संगीत शिक्षण की उत्तम व्यवस्था, छात्रों द्वारा संस्कृत सम्भाषण किया जाता हैं। ग्रीष्मकाल में आर्यवीर दल के शारिरीक एवं बौद्धिक पाठ्यक्रम का छात्रों को प्रशिक्षण, वर्तमान में 95 ब्रह्मचारी आर्षपाठ विधि से विद्याध्ययन कर रहे है। गुरुकुल गौशाला में 60 गीर नस्ल की उत्तम गायों का लालन–पालन। इन गायों से प्राप्त दूध का छात्रों को निःशुल्क वितरण किया जाता है।

वे कहा करते थे दानदाताओं के दान का प्रयोग दिखावे में कभी भी खर्च नहीं करना चाहिए। वे एक कहावत प्रायः कहा करते थे कि ऊँट की गरदन लम्बी होती है तो काटने के लिए नहीं होती है अर्थात् यदि कोई श्रद्धालु आर्य सज्जन दान करता है तो उस सज्जन से भी आवश्यकता के अनुसार ही दान लेना चाहिए अधिक नहीं।

पिछले तीस वर्षों में कभी भी उनका भोजन अलग से नहीं बनाया गया, वे स्वयं भी उसी भोजन को ग्रहण करते थे, जिस भोजन को गुरुकुल के ब्रह्मचारी किया करते थे।

स्वामी जी योगाभ्यास नियमित रुप से करते थे। सायंकाल सात बजे से अपने कमरे में ध्यान–योग में संलग्न हो जाते थे। प्रातःकाल ब्रह्ममुहुर्त में उठकर नित्यकर्म से निवृत्त होकर ईश्वरोपासना में बैठ जाते थे तथा आठ बजे से पहले कभी कक्ष से बाहर नहीं आते थे।

आदर्श संन्यासी – पुत्रैषणा वित्तैषणा लोकैषणा मया परित्यक्ता, मत्तः सर्वभूतेभ्योऽभयमस्तु।। (शतपथ)

पुत्र–शिष्य आदि का मोह, धन प्राप्ति की इच्छा, समाज में मेरी प्रतिष्ठा हो इन तीनों प्रकार की ऐषणाओं को मैं आज से छोड़ रहा हूँ, सभी प्राणी मुझसे अभय हो। संन्यास दीक्षा के समय की जाने वाली इस प्रतिज्ञा को स्वामी जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में चरितार्थ किया। गुरुकुल के निर्माण व संचालन के निमित्त दान प्राप्ति के लिये कभी भी उन्होंने सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया। वे कभी भी किसी भी महिला का नाम लेकर नहीं बुलाते थे, बड़ी उम्र की महिलाओं को माता जी कहकर व छोटी उम्र की महिला को बहिन जी कहकर बुलाया करते थे।

आचार्य ओम्प्रकाश आर्य (पिछले 31 वर्षों से गुरुकुल आबू में अध्ययन एवं निरन्तर निःशुल्क अध्यापन एवं व्यवस्थापक का कार्य), डॉ. अभिमन्यु (बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय में प्रोफेसर), कीर्तिचन्द्र शास्त्री (प्रधानाचार्य आदर्श विद्यालय कच्छ मांडवी), पं. लाभेन्द्र शास्त्री (पौरोहित्य कर्म, अहमदाबाद), अशोक शास्त्री, डॉ. हंसराज शास्त्री, आचार्य गगेन्द्र शास्त्री, डॉ. केशरमल शास्त्री, डा. रामदयाल शास्त्री आदि अनेकों स्नातक व सैकडों पूर्व छात्र वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में संलग्न हैं।

महाप्रयाण की ओर – सन् 2016 से स्वामी जी अल्जाईमर्स (भूलने की बिमारी) से पीड़ित थे, इस रोग की दवाई पिछले पॉच वर्षों से वे निरन्तर ले रहे थे। यह रोग उनकी माता जी व बड़ी बहन को भी था। 18 जनवरी 2021 को स्थानीय डॉक्टर को दिखाने पर पता चला कि उनके शरीर में रक्त की कमी है, स्थानीय डॉक्टर की सलाह पर उन्हें गान्धीनगर, गुजरात ले जाया गया, वहॉं स्वामी जी को चार बोटल रक्त चढ़ाने के पश्चात् विभिन्न चिकित्सकीय परिक्षणों से ज्ञात हुआ कि स्वामी जी के आमाशय में अन्तिम स्टेज का कैंसर है। जॉच रिपोर्टो को महावीर कैंसर हॉस्पिटल जयपुर, दिल्ली एम्स, जोधपुर एम्स एवं अहमदाबाद के अनेक विशेषज्ञ डॉक्टरों को दिखाया गया। रिपोर्ट दिखाये जाने के बाद सभी डॉक्टरों ने कहा कि रोग के अधिक फैल जाने के कारण व स्वामी जी की उम्र अधिक होने के कारण अब इस रोग का उपचार सम्भव नहीं है। तब 25 जनवरी 2021 को स्वामी जी को गुरुकुल में लाकर सेवा–शुश्रुषा एवं चिकित्सा की गई और अन्त समय में जब माघी पूर्णिमा का चन्द्रमा पूर्ण यौवन के साथ निर्मल आकाश में प्रकाशित हो रहा था, उसी समय ब्राह्ममूहुर्त में 3 बजकर 5 मिनट पर दिनांक 28–02–2021 को स्वामी जी ने नश्वर शरीर त्याग दिया ।

महर्षि दयानन्द के आदर्श भक्त, वैदिक आर्ष परम्परा के सुदृढ़ उन्नायक के रुप में पूज्य स्वामी जी का जीवन सदा प्रेरक बना रहेगा। आर्ष गुरुकुल आबूपर्वत की स्थापना करके एवं दशकों तक इसका सफल संचालन करके आपने आर्ष परम्परा के संरक्षण एवं समुन्नयन के लिए आने वाले युगों तक का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। यह गुरुकुल आपकी कालजयी कीर्ति का स्वर्ण स्तम्भ है।

मेरे जीवन में तथा मुझ जैसे अनेकों छात्रों के जीवन में माता के बाद कदाचित् माता से भी बढकर उपकार करने वाले गुरुवर पूज्य यतिश्रेष्ठ स्वामी महाराज के देवलोक गमन करने से मैं तथा समस्त गुरुकुल परिवार अनाथ जैसा अनुभव कर रहे हैं। उनका देवलोक गमन मेरी, गुरुकुल की और समाज की अपूरणीय क्षति है।

मैं पूज्य गुरुवर यतिश्रेष्ठ के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

जयन्ति ते सुकृतिनः तपसिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येशां यशः काये जरामरणजं भयम्।।

– आचार्य ओम्प्रकाश आर्य
आर्ष गुरुकुल आबूपर्वत, चलभाष–9414589510

प्रकाशन की तिथि : 1 अप्रैल, 2021 वैदिक सार्वदेशिक
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज टाण्डा, जिला–अम्बेडकरनगर, उ. प्र. का 129वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 18 से 21 मार्च, 2021 तक भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

आमंत्रित करते हैं और उन्हें विशेष स्नेह एवं सम्मान देकर टाण्डा एवं उसके आस–पास के लोगों को आर्य समाज के संगठन को मजबूत करने की प्रेरणा दिलवाते हैं।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य समाज के मंत्री श्री योगेश कुमार आर्य, श्री वीरेन्द्र आर्य, श्री दिवाकर आर्य, श्री ओम प्रकाश शास्त्री, श्री कृष्णा आदि कार्यकर्ताओं का विशेष योगदान रहा। डी.ए.वी. एकेडमी की प्राचार्या डॉ. अनीता सिंह जी एवं मिश्री लाल आर्य इण्टर कॉलेज की प्राचार्या डॉ. प्रशिशा श्रीवास्तव की इस पूरे कार्यक्रम की व्यवस्था में विशेष भूमिका रही। दोनों संस्थाओं की अध्यापिकाओं व समस्त कर्मचारियों व कार्यकर्ताओं ने बढ़–चढ़कर कार्यक्रम में भाग लिया। टाण्डा तथा टाण्डा से बाहर के भी आर्यजनों ने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर ज्ञान लाभ अर्जित किया।

इस अवसर पर श्री आनन्द कुमार जी ने स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में आर्य समाज का भविष्य उज्ज्वल बताते हुए कहा कि स्वामी जी के नेतृत्व में सभी आर्यजनों को संगठित होना चाहिए और यही समय है जब आर्य समाज को हम सब मिलकर ऊँचाईयों तक ले जा सकते हैं। आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी ने आर्य समाज के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपकार, वैदिक विज्ञान तथा अध्यात्म के गूढ़ रहस्यों पर अपने प्रभावशाली व्याख्यानों से श्रोताओं को रोमांचित कर दिया और चारों दिन उनके व्याख्यानों की धूम मची रही।

युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी का ओजस्वी उद्‌बोधन युवाओं के लिए अत्यन्त प्रेरणादायक रहा और सभी युवा उनसे आकृष्ट होकर उनसे विचार–विमर्श करते रहे। उत्साही एवं ऊर्जावान उपदेशक आचार्य सत्यप्रकाश आर्य एवं श्रीमती अर्चना शास्त्री के उपदेश एवं भजन भी बीच–बीच में श्रोताओं को सुनने को मिले। श्री कुलदीप आर्य द्वारा वाल्मीकि रामायण एवं मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र के वैदिक स्वरूप को प्रस्तुत करने वाली संगीतमय रामकथा लोगों के लिए विशेष कौतुहल का विषय रही। श्री कुलदीप जी पूरे भाव विभोर होकर रामकथा की जब प्रस्तुति देते हैं तब अनेक अवसरों पर श्रोतागण एवं स्वयं कुलदीप जी भी भावुक हो उठते हैं। उनकी व्याख्या अत्यन्त शिक्षाप्रद एवं सिद्धान्तों से ओत–प्रोत रहती है।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के वैश्विक दृष्टिकोण एवं वेदों के मानवीय मूल्यों पर केन्द्रित अपने व्याख्यानों से श्रोताओं को अत्यन्त प्रभावित किया। स्वामी जी वसुधैव कुटुम्बकम के विचार को केन्द्रित करके आर्य समाज के छठें नियम – अर्थात् संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है की व्यवहारिक व्याख्या कर रहे थे तो अनेक नये श्रोताओं ने यह सुनकर आश्चर्य किया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी मानव मात्र के कल्याण की भावना से ओत–प्रोत थे। स्वामी आर्यवेश जी ने एक ईश्वर की अवधारणा तथा उस ईश्वर द्वारा बनाई सृष्टि में परस्पर प्रेम, सौहार्द तथा सहृदयता एवं मानवीयता के मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए बल दिया।

क्षेत्र के प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ विचार–विमर्श करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने प्रत्येक गांव में आर्य समाज स्थापित करने की प्रेरणा दी और आगामी एक वर्ष में क्षेत्र के गांव में बनाई जाने वाली आर्य समाजों की सूचना उन्हें भी भेजने का आग्रह किया। कार्यक्रम अत्यन्त उत्साहवर्द्धक एवं प्रभावशाली रहा और पूरे क्षेत्र में एक नई जागृति उत्पन्न हो गई। सभी विद्वानों के सम्मान के साथ और सभी सहयोगियों के धन्यवाद के साथ श्री आनन्द कुमार जी ने कार्यक्रम के समापन की घोषणा की।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।